जूजू

(उपन्यास नहीं जिंदगीनामा)

जूजू

(उपन्यास नहीं ज़िंदगीनामा)

● रामानुज 'अनुज'

समदर्शी प्रकाशन
नव-सृजन के नवीन पृष्ठ...

335, देव नगर, मोदीपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश-250110

इस पुस्तक का कोई भी अंश, कहीं पर भी, बिना लेखक
की अनुमति के उद्धृत नहीं किया जाना चाहिए।

ISBN : 978-93-88049-70-2

सर्वाधिकार © : रामानुज 'अनुज'
43/436 हनुमाननगर,
रीवा (मध्यप्रदेश) 486005
मोबा. 90982 08132

मूल्य : 150/-

प्रथम संस्करण : अक्टूबर, 2019

प्रकाशक : समदर्शी प्रकाशन,
335, देवनगर, मोदीपुरम,
मेरठ, उत्तर प्रदेश-250110
मोबाइल नं: 9599323508
Website: www.samdarshiprakashan.com
Email: samdarshi.prakashan@gmail.com

आवरण : योगेश समदर्शी

मुद्रक : थॉमसन प्रेस

Juju Novel written by Ramanuj Anuj **₹150/-**

वान्या एवं विवान

‘जूजू’

की तरफ से यह कृति

आपको समर्पित,

हार्दिक स्वागत के साथ।

अनुक्रम

मैं और वो	9
मॉर्निंग वॉक	21
गुलाबो	27
धत्त तेरे की	32
जय हो	37
चमेली	46
तीन ज्ञानी	53
कुरता पाजामा	58
देव लोक का दफ़्तर	64
जूजू की देवलोक से वापसी	70
पांडुलिपि	73
आमंत्रण	79
सरस्वती	88
महा-यात्रा	97
रामानुज अनुज का रचना संसार	101

दो शब्द आपसे

पटवारी का सफर अभी ख़त्म नहीं हुआ है, न कभी होगा। अंतिम कदम रखने तक उसे 'जूजू' की ज़रूरत पड़ेगी। आप लोग भी अपने भीतर के 'जूजू' को कभी नाराज़ मत करिएगा। सहृदय 'जूजू' को हमेशा खुश रखियेगा, कसम से ज़िन्दगी गुलाब के फूल के मानिंद महकती रहेगी। ज़िंदादिल 'जूजू' दोस्ती का फ़र्ज निभाना जानता है। वह आपकी एक पुकार पर दौड़ा चला आएगा।

यह उपन्यास अकेले दम लिख सकूँ, ऐसी क़ाबिलियत मुझमें कहाँ? आप सबका सहयोग शामिल है। उपन्यास के जिस पन्ने में लगे 'यह मेरी बात लिखी है' तो यक़ीन मानिए आप ही ने लिखा है। ठीक और व्यवहारिक हिस्सा आपका... फ़िजूल और बे-सिरपैर वाला हिस्सा मेरे पटवारी का।

जयहिन्द!

-रामानुज 'अनुज'

मैं और वो

आज सूरजपुर दुल्हन की तरह सजाया गया था। सजे भी क्यूँ न किसी बड़े लेखक और राजनेता की शादी की दसवीं सलगिरह मनाई जा रही थी। नाम तो ठीक से याद नहीं आ रहा कि किस भाग्यशाली के लिये इतनी मग़जमारी हो रही थी, लेकिन नेता और अभिनेता और उस पर लेखक होने का पुछल्ला स्वयं में इतना बड़ा है, कि आगे जानने-समझने का जोख़िम नहीं उठाना चाहिए। याद रखने की जरूरत भी नहीं है, बस अपना नाम और अपने ससुराल वालों का नाम याद रहे, यही काफी है। ज़्यादा याद रखना भी सेहत के लिये ठीक नहीं है। दिमाग़ फेल होने का ख़तरा बना रहता है। आजकल डॉक्टर भी यही बोलते हैं कि ज्यादा दिमाग़ पे जोर मत डालो।

इस उपलक्ष में जगह-जगह कार्यक्रम कराये गये थे। एक खूबसूरत से दिखने वाले भवन के बड़े कक्ष में व्याख्यान माला का आयोजन भी कराया गया था। इस महान काम के लिए देश के कोने-कोने से विद्वान वक्ता बुलाये गये थे। वे सभी कड़ी तैयारी के साथ लैक्चर देने के लिए हाल में जमा हुये थे। नगर के गणमान्य नागरिकों और आये मेहमान वक्ताओं से हाल खचाखच भरा हुआ था, सभी सीटें फुल थी। नौ फुट ऊँचे दरवाजे पर बड़ा सा रेशमी झालरदार दस फुटा पर्दा लहरा रहा था।

तभी वह परदे को खिसका कर अंदर झाँकने की कोशिश करता है।

''अबे क्या है, क्या झाँक रहे हो?'' लंबे तगड़े यमदूत सा दिखने वाले गेट कीपर ने कड़क कर पूछा।

''कुछ नहीं, बस यूँ ही...'' दरवाज़े से हटते हुये उसने ज़वाब दिया।

''अरे ये क्या बात हुई, ताज्जुब है तुम अंदर घुसे कैसे? चलो पुलिस के पास।''

गेट कीपर उसे घसीटता हुआ सिपाही के पास ले गया।

''देखो साहब !... ये लेक्चर हाल में ताक झाँक कर रहा था।''

''क्यों भाई... गोपनीय कक्ष में क्यों झाँक रहे थे?'' वह सिपाही एक लंबी डकार लेकर बोला, जैसे अभी पेट भर भोजन करके आया हो।

''झाँक नहीं पाया सर जी! झांकने की कोशिश करी है बस।'' उसने जवाब दिया।

''कोशिश करना ही बड़ा गुनाह है, जानते हो अपराध की कौन सी धारा लगती है?, सिपाही ने कहा।

वह कुछ नहीं बोला, चुपचाप खड़ा रहा।

''अच्छा'' ये बता, सच-सच बताना, झूठ बिलकुल नहीं। माँ कसम झूठ सुनना और बोलना बंशराखन हवलदार को कतई पसन्द नहीं है... समझे।'' सिपाही गिरी मूछ को ऊपर उठाते हुये बोला।

''पूछिये?'' वह घबराकर बोला।

''गोपनीय हाल का पर्दा क्यों खिसकाया?''

''पुलिस जी! मैं कहानी ढूँढ़ रहा हूँ। दरअसल मेरे गुरू ने कहा है जो भी नज़र में दिखे, चाहे मकान हो, नदी हो, पहाड़ हो, कूड़ा करकट हो, खेत खलिहान हो, मंदिर-मस्जिद कोई भी हो, बन्दर, कुत्ता, बिल्ली, गाय बैल कोई भी जानवर चाहे जैसी भी पूँछ हो। सब में एक कहानी छिपी होती है। उसी की तलाश में निकला हूँ। बाहर अभी टैक्सी से उतरा हूँ। यह ख़ूबसूरत जगह लगी, तो सोचा की कहानी ढूँढ़ने का काम यहीं से शुरू किया जाय।''

''ओह! ये मामला है, ...दिस इज वेरी सीरियस.. बड़े साहब को बताना होगा।'' वह उसे सुनाकर बोला, फिर वह उँगली से कान खुजलाता हुआ बोला ...

''नाम तो बताया नहीं अपना।''

''पटवारी नाम है।''

''ओह! अब समझ में आया...पटवारी हो और कहानी को ढूँढ़ने निकले हो... राइट।''

''सर जी मुझे जाने दीजिए।''..वह प्रार्थना के भाव से बोला।

''अरे...ऐसे कैसे जाने दें, पटवारी होकर ग़लत काम करते हो, तुम्हारी रिपोर्ट कलेक्टर साहब को करनी होगी।''

''साहब मैं वो वाला पटवारी नहीं हूँ ...बल्कि मेरा तख़ल्लुस है 'पटवारी'.. असली और पूरा नाम रामलाल है।'' वह गिड़गिड़ाकर बोला।

''नाम कुछ भी हो पटवारी तो हो न, सरकारी मुलाज़िम होकर कहानी ढूँढ़ते हो, यह गम्भीर अपराध हुआ कि नहीं। कहानी से इतना लगाव है तो पहले नौकरी छोड़ो फिर कहानी ढूँढों... ऑन ड्यूटी कहानी ढूँढ़ना गम्भीर अपराध माना जायेगा। ऑफिस में काम-धाम नहीं रहता क्या? कहानी-कविता से इश्क़ लड़ाते हो, ज्यादा जवानी चढ़ी हो तो बताओ।''

''साहब आप ग़लत समझ रहे हैं, मैं वो नहीं हूँ।''

''सब समझता हूँ... मुझे चराने की कोशिश मत करो, इधर आओ।''

वह सिपाही के नज़दीक खिसक गया, सिपाही उसने पैंट की ज़ेब मे हाथ डालकर उसका स्मार्टफोन निकाल लिया और कड़ककर पूछा....

''व्हाट इज दिस ?

''स्मार्ट फोन है सर जी, अभी कल ही लिया हूँ।'' उसने बताया।

''ओके,.. बट ये जप्त किया जायेगा। और ज़ेब में क्या है? यह कहते हुए उसने पटवारी की जेब मे पड़े नक़दी-चिल्लर सब निकाल कर अपनी ज़ेब के हवाले कर लिया। और बोला....''ठीक है अब जाओ, ...ये सब माल जप्त किया जाता है, लेकिन शहर छोड़कर दो दिन तक कहीं मत जाना, कभी भी बड़े साहब तलब कर सकते हैं।''

''लेकिन मेरे पैसे,...फोन..लौटा दीजिये।''...वह गिड़गिड़ाकर बोला।

''अरे! गली मुँह चलाते हो, ये सब जप्त हो गया।''

''फोन तो लौटा दें साब!''

''कुछ नहीं लौटेगा, भागो यहाँ से, नहीं तो कपड़े उतरवा लूँगा, चड्डी पहने घूमोगे।''

इतना कहकर सिपाही बाथ रूम में घुस गया। वह उसके इंतज़ार में पंद्रह मिनट तक बाहर खड़ा रहा। आख़िर सब्र न हुआ तो बाथरूम के दरवाजे को हल्का सा धक्का दिया तो वह खुल गया। द्वार खुलते ही उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, वह बाथरूम नहीं था, बल्कि बाहर निकलने का रास्ता था। वो भी उसी रास्ते से बाहर निकल आया। वह समझ गया कि लुट चुका है, लेकिन उसे इतना सन्तोष ज़रूर हुआ कि हर जगह कहानी होने की गुरु जी की बात बिलकुल सही निकली।

बड़े पर्दे के पीछे कहानी ज़रूर थी। हो सकता है, कई कहानियाँ रही हों, कम्बख़्त ने घुसने नहीं दिया। यदि दो मिनट को भी हाल में घुसने देता तो कम से कम ये तो जान लेता कि कहानी महिला होती है या पुरुष होती है।

वह उस बड़े भवन से बाहर निकल कर, स्वयं से बात करता हुआ सड़क पर

चल रहा था। ... '' ये गुरु लोग भी कमाल करते हैं, ख़ुद तो कुछ लिखते-पढ़ते नहीं और मेरे जैसे नये चुलुकबाज़ो से कहते हैं... पहले कहानी देखो फिर लिखो। मैं तो अब साफ मना कर दूँगा, ...मुझे नहीं लिखना कहानी-वहानी।'' तभी उसके भीतर से आवाज आई...

''गुरु के लिए ऐसी बात मत सोचो...तुम क्या जानो, वे कहानी के चक्कर में कितने बार पिट चुके हैं।''

''कौन हो भाई तुम? मेरे पेट मे घुसे क्या कर रहे हो?'' पेट सहलाता हुआ पटवारी बोला।

''तुम्हारा .. बेस्ट फ्रेंड हूँ... 'जूजू'... पेट से आवाज आई।

''ठीक है, मान लेते हैं, दोस्त हो, लेकिन दिखाई क्यों देते हो? पेट मे घुसे-घुसे गड़बड़ी पैदा कर रहे हो।

भीतर से कोई आवाज़ या उत्तर नहीं आया, पटवारी ने इसे मन का भ्रम समझा और स्वयं से बात करता हुआ सड़क पे आगे बढ़ने लगा....

'जूजू' बड़ा अज़ीब नाम है... हे भगवान! ये क्या चक्कर है, अभी वह मुच्छड़ सिपाही, साला मोबाइल और रुपया छीन लिया, चिल्लर तक नहीं छोड़ा कि दो रुपये का गुड़ ख़रीद कर पानी पी सकूँ.. और अब ये कमबख़्त 'जूजू।'

''गाली मत दो पटवारी, तुम्हारे मन की हर सोची बात सुन-समझ सकता हूँ, तुम्हें मुझसे डरने की ज़रूरत नहीं है, तुम निहायत सीधे इंसान हो, आजकल की भाषा में कहें तो अव्वल दर्जे के बेवकूफ़ आदमी हो, मुझे तुम पर रहम आता है, इसलिए बोल दिया हूँ, तुम्हें बुरा लगता हो तो सॉरी...मैं चला...।''

''जूजू भैया मुझे छोड़कर कहीं मत जाओ, इस पटवारी का कोई दोस्त नहीं है, तुम भले ही दिखाई नहीं पड़ते लेकिन मुझे तुम्हारी बहुत ज़रूरत है, तुम सच्चे लग रहे हो, बस अपना छोटा सा परिचय दे दो।''

'जूजू' नाम है मेरा, हर इंसान के भीतर मेरा निवास है, उसे हर वक्त सही-गलत की पहचान कराना मेरा काम है, जो सच्चे दिल के होते हैं, सिर्फ उन्हीं के साथ मेरी पटती है, मेरा कहा जो नहीं मानता है, उसे छोड़कर चला जाता हूँ, पल भर में हज़ार कोस से अधिक आ-जा सकता हूँ, कहीं से भी मैसेज ला सकता हूँ और मैसेज पहुँचा सकता हूँ।''

''जूजू भैया आप साथ हैं, तो बातें चलती रहेंगी, अभी तो यह बताओ कि गुरु जी कहानी की तलाश में कैसे पिट गये थे ?'' पटवारी ने पूछा।

''तुम्हारे गुरु पण्डित दीनानाथ शास्त्री रोमांटिक मिजाज़ के हैं, कहानी लिखते-

लिखते वे कहानी की नायिका से ही प्यार कर बैठे, वह दिखती तो कहीं नहीं थी, लेकिन वे महसूस करते थे कि वह उनसे मिलती है, प्यार की बातें भी करती है। उनसे एक चूक हो गई, हुआ कुछ यूँ कि एक लड़की उनके पास पी.एच-डी. करने की मंशा लेकर आयी, वे उसे अपनी कहानी की नायिका समझ कर उसे चूम लिये।''

''तो ग़लत क्या हुआ? चूमना क्या ग़लत काम है? पटवारी ने भोले पन से सवाल किया।

''खालिस गधे हो पटवारी! ग़लत क्या है? सही क्या है? समाज तय करता है, एक अकेला आदमी नहीं, इस लिहाज़ से शास्त्री जी का कृत्य समाज के नज़रिये से ग़लत पाया गया और उन्हें दंड़ मिला।'' जूजू ने समझाया।

''क्या सज़ा दी समाज ने उन्हें?''

''शादी करा दी दोनों की, तुम्हारी गुरु माई वही तो हैं।''

''वे साथ में रहती तो नहीं?''

''यही तो उनकी सज़ा हुई पटवारी, हाड़ मांस की सुंदरी को कहानी की नायिका समझकर वे प्यार कर बैठे। कहाँ तक साथ निभाती हैं, नाशवान चीजें, तुम्हारी गुरुमाई अब इस संसार में नहीं हैं। शास्त्री जी के साथ भौतिक रूप से अब वे नहीं हैं, लेकिन वे अब भी शास्त्री जी से रात की तनहाई में, जब सारा आलम सोता है, दबे पाँव आकर मिलती हैं, बात करती हैं।''

''जूजू! तुम वाकई बहुत जानते हो, कितनी उम्र है तुम्हारी?''

''कोई गिनती नहीं बनी है, बस समझ लो जहाँ से गिनती ख़त्म होती है, उससे अधिक की आयु है मेरी।''

इसी तरह के तर्क-कुतर्क में शाम गहराने लगी थी। निकट ही उसे एक पार्क दिख जाता है। वह थोड़ा शुकून से बैठने की ग़रज से पार्क के भीतर जाकर एक पत्थर की बेंच में बैठ जाता है। उसे गिरते-उठते, दौड़ते बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं। उनके पीछे दौड़ते, झूला झुलाते, आइसक्रीम खाते खिलाते बड़े लोग भी बच्चों की तरह ही लग रहे थे। नज़दीक ही चाट फुलकी के लगे ठेले से आती महक उसकी भूख को जगा रही थी। उसका जी ललचाने लगा। ...मन किया की जाकर दो समोसे वो भी जड़ दे...पर क्या करें, हवलदार चिल्लर तक नहीं छोड़ा था।... क्या करे।... फिर सोचा समोसा वाले से ही हाथ पाँव जोड़कर एक चाट माँग ले। वह शायद मना नहीं करेगा। यह सोचकर वह आगे बढ़ा ही था कि उसके भीतर से जूजू की आवाज सुनाई पड़ी...'' अरे पटवारी कितनी ग़लत सोच है, तुम्हारी! छी! छी! बिना पैसा चुकाये खाने की सोच रहे हो।

''क्या करें भीतर वाले जूजू भैया? ...भूख जोर से लगी है।''

''भाई सब्र करना सीखो, तुम्हें पता नहीं ऐसी ओछी हरक़त से कहानी का मुँह ख़राब हो जायेगा।''

इतना सुनते ही पटवारी मारे खुशी के उछल कर बोला... ''मिल गया, मिल गया।''

''क्या मिल गया... और उछल-कूद क्यों कर रहे हो? मुझे धक्के लग रहे हैं।'' भीतर से आवाज़ आई।

''कहानी का मुँह मिल गया भैया... लेकिन जूजू भैया! कहानी एक जगह क्यों नहीं मिल रही... कहीं सींग कहीं पूँछ मिल रही है। ''

''समूची कहानी एक जगह कभी नहीं मिलती है, मान लो संयोग से एक जगह मिल जाए तो वह बहुत खतरनाक होती है।''

''जूजू भैया... मुझे तो भूख से ख़तरनाक कुछ नहीं लगता।'' पटवारी इतना बोलकर पत्थर की बेंच से उठा और पार्क से बाहर आ गया।

इधर-उधर भटकते-भटकते उसे जोर से भूख लग आयी थी, शाम भी रात की काली चादर ओढ़ चुकी थी, सड़कों, गलियों में बिजली के रंग-बिरंगे फूल खिल गए थे, लेकिन पटवारी को कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था, उसे जोर की भूख लगी थी, और दूर-दूर तक भोजन का जुगाड़ नहीं दिख रहा था, वह सड़क में निरुद्देश्य चल रहा था, ठीक उस मुसाफ़िर की तरह जिसे अपनी मंजिल का पता न हो।

उसे जूजू का डर अलग से परेशान किये था, यदि कहीं खाने का जुगाड़ जम भी गया तो यह खाने नहीं देगा। ये मुझे मारने पर तुला है। जबकि इसे पता है यदि मैं मर गया तो यह भी मर जायेगा।

''ख़ूब गरिया लो पटवारी, लेकिन मैं कहानी ख़राब नहीं होने दूँगा।''

'' बहुत जोर की भूख लगी है, जूजू भैया... कुछ खाने का इंतज़ाम करो अन्यथा इस पटवारी की दुम वाले नवोदित कहानीकार के साथ-साथ आपकी भी मौत तय है भैया।''

''यही तो चाहता हूँ... हम दोनों मर जायें... फिर देखना... इसके बाद जो कहानी बनेगी, वह तुम्हें मुंशी प्रेमचंद से भी ऊपर लाकर खड़ा कर देगी।''

''मुझसे भूख नहीं सही जायेगी, मुंशी जी के पास पेट न रहा होगा, इसलिए वे बिना खाये पिये इतना सारा लिख गये।''

''अरे भई! लेखक को लिखते-लिखते मर जाना चाहिए, ठीक एक फ़ौजी की तरह, तभी उसका नाम होता है।''

''भैया!... तुम भीतर वाले हो, बाहरी दुनिया का पता नहीं। ज़िंदा रहते हताशा के अलावा कुछ नहीं मिलता लेखक को... हाँ! मरने के बाद सरकार की आत्मा जाग जाती है और मरने के बाद उसे महान कवि, शाइर, लेखक, चिंतक, विचारक, युग दृष्टा, यायावर, कलम का सिपाही महाप्राण और न जाने क्या-क्या उपाधि दे देते हैं।

''पटवारी!... तुम शरीर और अक्ल दोनों से मोटे हो, श्रद्धांजलि देना इसे कहते हैं, बड़े नसीब वाली आत्माओं को ऐसा सम्मान मरने के बाद मिलता है।''

हुँह! इसी श्रद्धा... जली की आड़ में क्या-क्या नहीं जल जाता, लाखों करोड़ों का माल मोटे-मोटे लोग डकार रहे हैं। उस बेचारे लेखक के परिवार को क्या मिलता है... ठेंगा।''

''तुम नहीं सुधरोगे पटवारी! तुमसे बहस करना बेकार है। लेकिन इतना जान लो कहानी ख़राब नहीं होने दूँगा।''

जैसी मर्जी भैया! ''लेकिन हमारी बातचीत से एक बात तो तय लग रही है, कि कहानी का भी पेट होता है। जिस तरह से हम सब के पास है, छोटा, बड़ा, दबा, पिचका हर प्रकार का, हर साइज का।''

ऐसे ही सत्संग करते-करते वह काफी दूर चला गया, वैसे भी निंदा पुराण से निकले रस के पान से आदमी सब भूल जाता है, इस दो कौड़ी के वक्त की औक़ात क्या है। अचानक चलते-चलते वह एक जगह रुक गया, कहीं से विभिन्न पकवानों और सब्जियों की सोंधी-सोंधी महक उसके नथुनों से टकराने लगी थी। उसकी भूख चौगुनी हो गई। वह बर्दास्त नहीं कर पाया और रोता हुआ बोला....''भैया! अब मैं भूख से मर जाऊँगा... मुझे कुछ तो खाने की आज्ञा दे दो वैसे भी अब रात के आठ बज रहे हैं।''

''ठीक है पटवारी! तुम्हारी जान बचाना मेरा कर्तव्य है। मैं अपनी शूक्ष्म दृष्टि से देख रहा हूँ... वहाँ कोई उत्सव है,... खाने के साथ-साथ पीने का भी इंतज़ाम है। अभी पंडित बड़बड़ा रहा है... शायद खाने में विलंब है। तुम दाल रोटी खा सकते हो। इसके सिवा किसी अन्य पकवान को मत खाना। ...दो गिलास पानी के अलावा किसी भी पेय को हाथ मत लगाना। समझ गये।''

''जी भैया! सब समझ गया। .... बस एक बात मेरी खोपड़ी कबूल नहीं कर रही के सिर्फ दाल रोटी खाने की इजाज़त दे रहे हो?

''तुम्हारी खोपड़ी उलटी फिट है पटवारी! ...भारी भोजन से पेट ख़राब होता है। पेट ख़राब होने से कहानी ख़राब होती है। दाल रोटी को आयुर्वेद में हल्का भोजन माना गया है। इतना ही नहीं दाल रोटी खाने से कहानी में और जायका आता है।

इसीलिये तुम्हे अनुमति दे रहा हूँ। सोने का भी कहीं जुगाड़ कर लेना।''

''लेकिन भैया!... हल्का भोजन तो खिचड़ी होता है।''

''होता था, पर जब से बीरबल ने खिचड़ी बनाई, तब से यह मान्यता ख़त्म हो गई है। दाल रोटी को सर्व सम्मति से हल्का स्वीकार किया गया है।'' ''..अच्छा पटवारी मुझे अब नींद आ रही है। मुझे सोने दो...सुबह मिलेंगे।....गुड नाइट।''

''अच्छा हुआ ये सो गया...वैसे भी आत्मा नाम का जीवधारी रात में जल्दी सो जाता है, तभी तो बड़े-बड़े काम रात में ही किये जाते हैं, बड़े-बड़े लेन- देन भी रात में किये जाते हैं, चोरी-डकैती का काम भी रात में सम्पन्न होते है,.. शादी ब्याह भी ज़्यादातर रात में ही होते हैं। रात में ही पुलिस को ग़श्त मारने को कहा जाता है।.. कहते हैं कि हर बड़ा काम रात में करने से देव और दानव दोनों खुश होकर आशीर्वाद देते हैं। रामायण और महाभारत की लड़ाई का एक्शन प्लान रात में ही तैयार होता था। भले ही वह आजकल के सरकारी प्लान की तरह टॉय-टॉय फिस्स हो जाये। खैर! इन गम्भीर मुद्दों से हमें क्या लेना देना। इन पचड़ों में मुझे नहीं पड़ना। मुझे तो केवल दाल रोटी से मतलब है।''यही सब सोचते-सोचते पटवारी उत्सव स्थल में पहुँच गया।

वाह! क्या लाइटिंग है, ...लगता है चाँद सूरज तारे सभी आये हैं। उसे लगा उसका चेहरा इन सब के बीच जाने के क़ाबिल नहीं है। दूर खड़े पानी के टैंकर से वह मुँह में पानी के छीटे मारकर चेहरा धोता है। फिर बिना मुँह पोछे ही उँगलियों के सहयोग से कंघी कर लेता है। कपड़े तो चलेंगे, लाइटिंग में गंदे कपड़े और चमकते है। एक हाथ पैंट की जेब में डाल और गर्दन सीधी रख प्रवेश द्वार की ओर बढ़ गया। वहाँ बैठे एक अधेड़ से व्यक्ति ने उठकर उसका स्वागत किया और हाथ के इशारे से अंदर जाने को कहा। वह सीधा भूखे बैल की तरह भोजन के पंडाल में पहुँच गया।

प्लेट उठाया दाल लिया और रोटी की खोज में इधर-उधर देखने लगा, लेकिन रोटी कहीं नहीं दिखी। एक जगह भीड़ सी दिखी, उसने सोचा चलो देखते हैं, हो न हो रोटी वहीं हो।

वह उधर आ गया... देखा रोटी ही थी..। लेकिन रोटी के अनुपात में भीड़ ज्यादा थी। रोटी वाले लोग अनुशासित थे, बिना किसी दिशा-निर्देश के ही लाइन लगा लिये थे। वह लाइन में लग कर बहुत खुश हुआ कि चलो अब तो रोटी मिलकर ही रहेगी। आख़िरकार थोड़ा इंतज़ार के बाद उसे भी एक रोटी मिल गई। वह विजयी भाव से लाइन छोड़कर एक जगह खड़ा होकर खाने लगा।

थोड़ी दूर पर दो महिलाएँ प्लेट लिये दिखी, उनकी प्लेट पूरी फुल थी। सब्जी,

दाल, चावल, रायता, और वो सब कुछ जो वहाँ खाने में था, उनकी प्लेट में पोखर के मछलियों की तरह तैर रही थी। वह उनकी खुली पेट, पीठ और रंग रोगन किये चेहरे की ओर सहज ही आकृष्ट हो गया और कुछ दूरी बनाकर वो भी रोटी खाने लगा। बीच-बीच में वह उन्हें भी देख लेता था। वे पास में खड़ी थीं..। उनके बीच की बातें भी साफ सुनाई दे रही थी, उनमें से एक बोली...

''शीला! पंड़ताइन को देखो न, पूरा घर लिवा लाई है। शर्म नहीं आती सौ रुपया में पूरा घर खा जाता है, पूरे हजार का खाना डकार जाते है।''

ये तो यहाँ का रिवाज सा है, आंटी! एक कार्ड में पूरा घर चला आता है।'' दूसरी अपने को कम उमर की दिखाते हुये बोली।

''शीला! ''खाना कुछ ख़ास नहीं बना है, किसी चीज़ का टेस्ट नहीं मिल रहा।''

''प्लेट में एक गिलास पानी भी मिला लो।'' पटवारी के मुँह से अचानक निकल गया। उसे तुरंत अपनी ग़लती का एहसास हुआ और वहाँ से हट गया, ग़नीमत रही किसी ने सुना नहीं। वैसे भी महिलाएँ जब बात करती हैं, तब उन्हें भोंपू की कानफोडू आवाज़ भी सुनाई नहीं देती है।

अब वह जहाँ तीन चार लड़के खा रहे थे, उनके बीच आकर खड़ा होकर खाने लगा, उनके मध्य कुछ इस तरह बातें चल रही थी... ''यार इधर काहे का पार्टी है?'' हरी सर्ट वाला लड़का मुँह में दही बड़ा ठूँसते हुये बोला।

''अपन को क्या मतलब, जल्दी खाना ख़तम कर... और खिसक चलें... कोई देख लेगा तो जूते भी पड़ेंगे।''

उनकी बातों में दम था, इसलिए वह भी जल्दी-जल्दी लंबे हाथ से रोटी ख़त्म किया, बची हुई दाल को सुड़क गया और पानी पीने चला गया। उसे याद आया कि जूजू भाई साहब ने दो गिलास पानी की अनुमति दी है। ठीक है, इतना ही सही,... और बड़े दो गिलास पानी गटागट पी गया। फिर एक बड़े हाल में घुस कर सबसे आख़िरी में बैठ गया। इसी हाल में कार्यक्रम चल रहा था। पीछे बैठने से उसे यह तो नहीं मालूम हो पाया कि काहे के उपलक्ष्य में दावत हुई है। अलबत्ता आगे की लाइन में बैठे लोंगों की बाते ज़रूर सुन रहा था।

''बड़े बाबू! मेरा राशन कार्ड नहीं बन रहा है, पूरे चार महीना से दौड़ रहा हूँ। कृपा करके आप थोड़ा देख लें, जो खर्चा पानी होगा मिल जायेगा।''

''खर्चे की बात नहीं वर्मा जी! जो तो मालुम है, मिल जैहै, ..पर क्या बतामय..., जब से नओ साहब आओ है, ...कछू काम नई हो रओ..चाय पानी तक को जेब से लग आओ है।'' बाबू टाइप का वह आदमी ख़ीसे निपोरते हुये बोला।

दाहिने बाजू में विराजमान दो लोगों के बीच में कुछ इस तरह बातचीत हो रही थी....''सुधीर! आजकल कहाँ हो?''

''क्या बताये सर! बैढन में हूँ। बहुत परेशानी है।''

''ओके, कब गये हो? ये तो बहुत दूर है।''

''अभी ट्रांसफर हुआ है, दस दिन हुआ ज्वाइन किये हुये। कुछ जुगाड़ करें सर''

''भई इतना जल्दी कैसे हो, ...अभी तो गये हो...वैसे भी तीस साल से तो घर के पास ही जमे रहे। ...पहली बार तो दूर गये हो।''

''कुछ तो करो... सर प्लीज...'' सुधीर नाम का वह आदमी गिड़गिड़ाकर बोला।

''तुम्हारी प्रॉब्लम क्या है?''

''होटल का बनाया खाता हूँ, पेट ख़राब हो जाता है।''....यह सुनकर उसे जोर की हँसी आयी लेकिन मौके की नज़ाकत को भांप हँसी दबा गया।

''फैमिली क्यों नहीं साथ रखते? खाने पीने की चिंता नहीं रहेगी।''

''सर! घर में भी प्रॉब्लम है... कुत्ते की देख-रेख कौन करेगा?''

इस बार पटवारी हँसी नहीं रोक पाया...हा..हा..हि..ही..हो..हो ये तो कुत्ते से भी गया गुजरा है, इसकी औरत कुत्ते की देख-रेख करेगी, इसकी नहीं।

वो तेज़ कदमों से चलकर हाल के बाहर आ गया। वह बाहर निकल कर इधर-उधर टहलता रहा... अब वह सोने की फिराक में था, लेकिन उसे कोई मुफ़ीद जगह नहीं मिली, वह भाग-भटककर फिर वहीं आ गया। मेज़बान और मेहमान यहाँ से जा चुके थे। सिर्फ खाना परोसने वाले और बर्तन माँजने वाले बचे थे। जो बचे हुये खाने को सहेज रहे थे, प्लेट्स धो रहे थे। उसे अब जोर की नींद आ रही थी, वह उनके पास जाकर बोला..''भैया ''मेहरबानी करके मुझे कहीं भी थोड़ी सी जगह बता दो, बहुत तेज़ नींद आ रही है।''

''इधर तुम्हारे सोने लायक जगह नहीं है।'' बर्तन धोता हुआ लड़का बोला।

''तुम किसी बड़े घर के लगते हो?'' दूसरे ने पूछा।

''नहीं भाई! तुम्हारी ही बिरादरी का हूँ।'' पटवारी उनसे झूठ बोला।

''काम की तलाश में हो?''

''हाँ।''

''ठीक है, कल मालिक से बोलकर काम दिला दूँगा, बर्तन लेकिन रगड़-रगड़ के धोना, जरा भी जूठ कड़ाही, पतीली में मिलते ही मालिक कान पकड़ कर निकाल देगा, बहुत कड़क है वो...समझे। आओ मेरे साथ'' वह उसके पीछे-पीछे चल दिया। वह लड़का उसे एक कमरे में ले गया। कमरा बहुत गंदा था, खाना बनाने के बर्तन

और कुछ कबाड़ यत्र-तत्र बिखरे पड़े थे। एक कोने में मैली कुचैली बदरंग दरी जो शायद नयेपन में सफेद रही होगी, पड़ी थी। उस दरी की ओर इशारा करते हुए वो लड़का बोला... ''इसे फैलाकर सो जाना सुबह ऐसे ही तह करके रखने के बाद ही कमरे से बाहर पैर रखना। समझे?''

''सब समझ गया।''

''भीतर से सांकल लगा लेना।''

''क्यो? कोई डर है क्या?'' पटवारी ने पूछा।

''मत लगाना, रात में देशी कुत्ते घुसकर मुँह में सुस्सू कर देगें तब ये न कहना के मैंने बताया नहीं था।''

वह लड़का चला गया था। दरवाजे में सांकल नहीं थी, इसलिए भिड़ाकर एक तीन टाँग की टूटी कुर्सी से टेक लगा दिया, ताकि जब कुत्ते घुसें तो उसे आहट मिले। दरी को उसने खोला ही नहीं जैसी रखी थी, रहने दिया। दरी को सिरहाना बनाकर वह लेट गया। पटवारी भीतर से प्रसन्न था। क्यों न हो? उसने कहानी का मुँह से लेकर पेट तक देख-सुन लिया था। इसी खुशी में पटवारी पता नहीं कब सो गया।

रात्रि का अंतिम प्रहर हुआ होगा कि उसे यूँ लगा कि कोई उसे आवाज़ दे रहा है। वह हड़बड़ाकर उठ गया और आवाज़ को सुनने की कोशिश करने लगा। ''उठो पटवारी! पाँच बज गये, चलना नहीं है क्या?''

जूजू को पढ़ने के लिए अपनी प्रति आज ही खरीदें।